International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly
ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 0.899
Vol.1No.5 May- June 2014

पत्रकारिता के क्षेत्र में हिन्दी की भूमिका एवं रोज़गार की संभावनाएँ

डॉ. श्रीकांत बि. संगम
विभागाध्यक्ष तथा सह प्राध्यापक हिन्दी विभाग
सि.एस.बी. कला, शा.एस.एम.आर.पि
विज्ञान और जि.एल.आर. वाणिज्य महाविद्यालय, रामदुर्ग

राष्ट्रीय गौरव हिन्दी भाषा का पत्रकारिता के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान है । सामाजिक सरोकार जनहित के मुद्दों को प्रभावी सकारात्मकता के साथ आमजन को सुलभ तरीके से पहुँचाने में आज भी हिन्दी भाषी पत्रकारिता की महत्वपूर्ण भूमिका कायम है । दैनिक जीवन में हिन्दी भाषा को बोलचाल के साथ ही आम व्यवहार में लाना जरूरी है ।

भारत वर्ष में आधुनिक ढंग की पत्रकारिता का जन्म अठारहवीं शताब्दी के चतुर्थ चरण में कलकत्ता, मुंबई और मद्रास में हुआ । १७८०ई. में प्रकाशित हिके का 'बंगाल गजट' कदाचित इस ओर पहला प्रयत्न था । पत्रकारिता जिसे लोकतंत्र का चौथा स्थंभ माना जाता है, हिन्दी भाषा के विकास में अपनी महती भूमिका निभाई । हिन्दी जब अपनी शिशुवस्था में थी तब पत्रकारिता के माध्यम से उसे विकसित किया गया । पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी भाषा प्रगाढ़ हुई ।

पत्र-पत्रिकाओं ने राष्ट्र के नवनिर्मण के अभियान में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया, लेकिन इसके साथ-साथ उन्होंने भ्रष्टाचारी नेताओं और नौकरशाहों के कान भी ऐंठे। पत्रकारों ने किसी भी घटना या मुद्दे की तह में जाकर खोज-बीनकर तथ्यों को उजागर किया। जनता की हँसी-खुशी उल्लास-उमंग के साथ साथ उसकी व्यथा-वेदना और पीड़ा कसक की भी जुबान दी और उसके दर्द को सामने लाकर सरकार और जनता के बीच अपनी भूमिका का ईमानदारी के साथ निर्वाह किया ।

हिन्दी पत्रकारिता के उद्भव एवं विकास को पाँच निम्नाखित भागों में बाँट कर देख सकते है;

१. पूर्व भारतेंदु युग (१८२६ से १८६६)
२. भारतेंदु युग (१८६६ से १८८५)
३. उत्तर भारतेंदु युग (१८८८-१९०२)
४. द्विवेदि युग (१९०३-१९२०)
५. वर्तनाम युग (१९२१ से आज तक)

पूर्व भारतेंदु युग : (१८६२ से १८६६) :

हिन्दी पत्रकारिता के इस युग में उर्दू अखबारों की संख्या बहुत अधिक थी । सरकार की हिन्दी विरोधी नीति के कारण हिन्दि के समाचार पत्रों को आर्थिक कठिनाएँ झेलना पड़ती थी । हिन्दी में प्रकाशित होनेवाले समाचार पत्रों की संख्या बहुत अधिक होने के बाद भी यह अधिक समय तक नियमित रूप से प्रकाशित नहीं हो

पाये । इस युग को हिन्दी पत्रकारिता का प्रयोग काल कहा जाता सकता है । प्रतिकूल वातावरण साधनों एवं सहायकों के अभाव तथा अपेक्षित संख्या में पाठक उपलब्ध नहीं होने के कारण इनमें से अधिकांश बंद हो गये ।

भारतेंदु युग : (१८६६ से १८८५ तक) :

इस युग में बहुत बड़ी संख्या में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन आरंभ हुआ । इस युग के कुछ महत्वपूर्ण पत्रिकाओं का नाम उचित वक्ता, सजन कृति, सुधाकर, क्षेत्रीय पत्रिका, आनंद कदंबिनि, वैष्णव, ब्राह्मण और हिन्दुस्थान आदि इस काल में अनगिनत पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन में पत्रकारिता काल में परिपक्वता आती गई । समाचार पत्रों में प्रकाशन की दृष्टि से इसे सबसे समृद्ध युग माना जाता है । इस युग में २०० से भी अधिक समाचार पत्रों का आरंभ हुआ ।

उत्तर भारतेंदु युग (१८८८ से १९०२ तक) :

भारतेंदु और उत्तरभारतेंदु में प्रकाशित होनेवाली पत्रिकाओं की संख्या करीब ५०० थी। उस समय दैनिक पत्र की मांग और साप्ताहिक की मांग अधिक थी । इस पूरे काल खण्ड में भारतेंदु की आदर्श पत्रकारिता थी । इस काल में पत्रकारिता साहित्य से अलग एक विधा के रूप में विकसित हुई भारतेंदु ने ही सामाजिक, राजनीतिक और साहित्यिक विचारधाराओं का अलग-अलग विकास किया पत्रकारिता को धर्म के प्रचार को अलग किया इसी कालखण्ड में हिन्दी पत्रिकारिता में उन्नति के शिखर को छूने का प्रयत्न किया ।

द्विवेदी युग (१९०३ से १९२० तक) :

सन् १९०० में सरस्वती पत्रिका का आरंभ हुआ । यद्यपि इस युग का राजनैतिक नेतृत्व मुख्यता बांग्ला तथा मराठी समाचार पत्रों के हाथ में रहा । किंतु हिन्दी पत्रकारिता में 'अभ्युदय प्रताप' 'कर्म योगी' और हिन्दी 'केसरी' आदि ने उसी दिशा में महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व निभाया । इस युग के अधिक साहित्यकारों ने पत्रकारिता के जगत् में बढ़-चढ़कर अपनी भूमिका निभाई । भाषा सीकने केलिए समाचार पत्रों का सहारा लेने का धारणा भी इसी युग में स्थापित हुई ।

वर्तमान युग :

हिन्दी पत्रकारिता के उत्कर्ष का समय देश की आज़ादी के बाद आया । समाचार पत्रों का व्यापक विकास हुआ। भारत के समाचार पत्र पंजीयक का रिपोर्ट के मुताबिक भारतीय भाषाओं में सर्वाधिक पत्रों की संख्या हिन्दी भाषा की है, दूसरे समाज पर अंग्रेज़ी भाषा के पत्र हैं । वर्तमान में हिन्दी पत्रकारिता ने अंग्रेज़ी पत्रकारिता के दबदबे को खत्म कर दिया है । पहले देश-विदेश में अंग्रेज़ी पत्रकारिता का दबदबा था । लेकिन आज हिन्दी भाषा का झण्डा चारों ओर लहरा रहा है ।

पत्रकारिता के प्रमुख चार उद्देश्य माने गये हैं-

1. **सूचना देना :** पत्रकारिता द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, व्यापारिक, पारिवारिक, विज्ञान, खेल-कूद आदि अनेक क्षेत्रों की नव्यतम सूचनाओं से पाठकों को अवगत कराया जाता है ।
2. **व्याख्या करना :** सामान्य पाठकों को सूचना के गूढ़ रहस्यों की जानकारी देने केलिए समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं में विभिन्न समाचारों एवं घटनाओं की व्याख्या की जाती है ।

3. **मार्गदर्शन करना :** आज पत्रकारिता जन शिख्षा का एक प्रभावशाली व सशक्त माध्यम बन चुका है । यह विविध क्षेत्रों मे प्रत्येक वर्ग के पाठक को पूरक शिक्षा प्रदान करता है । अनेक प्रकार के लेख-पाठकों का मार्गदर्शन करते हैं ।
4. **मनोरंजन करना :** समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं में फिल्मी दुनिया हास्य व्यंग्य आदि के नियमित कालम बने होते हैं, जो पाठकों के मनोरंजन की आवश्यकता को भी पूरा करते हैं ।

समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं का मूल उद्देश्य सदैव जनता की जागृति और जनता तक विचारों का सही संप्रेषण करता रहा है । महात्मा गाँधी की पंक्तियाँ है- "समाचार पत्र का पहला उद्देश्य जनता की इच्छाओं, विचारों को समझना और उन्हें व्यक्त करना है। दूसरा उद्देश्य जनता में वांछनीय भावनाओं को जागृत करना है ।

हिन्दी पत्रकारिता ने समय के साथ चलते हुए और नवीनता के आग्रह को अपनाते हुए सामाजिक आवश्यकता के तहत हिन्दी भाषा विकास का कार्य अत्यंत तत्परता, वैज्ञानिकता और दूरदृष्टि से किया है । सहज संप्रेषणीय भाषा में नई संकल्पनाओं को व्यक्त करने केलिए भाषा-निर्माण या कहें प्रयुक्ति-विकास का जैसा आदर्श बिना किसी सरकारी सहयोग य दबाव के हिन्दी पत्रकारिता ने बनाकर दिखाया है, उसे भाषाविकास अथवा भाषा नियोजन में सामग्री नियोजन को आदर्श स्थिति कहा जा सकता है ।

"निज भाषा उन्नति अहे, सब भाषा को मूल ।
बिनु निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिय को शूल ॥"

भारतेंदु के यह उदगार मानव जीवन और सभ्यता में भाषा के महत्व को दर्शाते हैं । भाषा हमारे सोचने की दिशा निर्धारित करती है, हम बोले चाहे कोई भी भाषा मगर सोचते अपनी मातृभाषा में ही हैं । मातृभाषा की तरक्की से ही राष्ट्र की साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक उन्नति एवं प्रसिद्धि संभव है और यह तरक्की प्रचार के माध्यम से ही संभव है । बाज़ारवाद के युग में यह कहावत खूब प्रसिद्ध है कि- "जो दिखता है, वह बिकता है" ठीक वैसे ही आज हिन्दी ने संचार माध्यमों के द्वारा दुनियाभर में क्रांति मचा दी है। हर कोई हिन्दी मेंखना चाहता है, हिन्दी सीखना और बोलना चाहता है । हिन्दी में रोजगार के अवसर भी बढ़े हैं और यह सब संभव हो सका है विभिन्न संचार माध्यमों से जिसमें प्रिंट और वेब पत्र-पत्रिकाएँ आते हैं । आज हमारे देश में पत्र-पत्रिकाओं ने सूचना एवं तकनीक का साथ लेकर विश्वभर में हिन्दी के प्रचार की कमान संभाली है और जन-जन में राष्ट्रभाषा के प्रसार और उसे अपनाने का बिगुल बजाया है ।

हिन्दी भाषा में रोजगार की अपार संभावनाएँ है । इस समय अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ हिन्दी का अध्ययन करनेवाले युवा अपना भविष्य सँवार सकते हैं । हिन्दी में रोजगार के अवसरों को जानने से पूर्व अगर आप इन तथ्यों पर दृष्टि डाले तो पूरा परिदृश्य स्पष्ट हो जाएगा। हिन्दी दुनिया की दूसरी सबसे ज्यादा बोली जानेवाली भाषा है । इस समय दुनिया भर में हिन्दी बोलनेवालों की संख्या ५५ करोड़ से अधिक है । वहीं हिन्दी समझ सकनेवाले लोगों की संख्या एक अरब से भी ज्यादा है ।

आइए नज़र डालते हैं उन तमाम क्षेत्रों पर जिसमें हिन्दी पढ़ानेवाली छात्र करियर चुनकर अपना भविष्य सुरक्षित कर सकते हैं । साथ ही अपनी राष्ट्रभाषा के संवर्धन का पुण्य भी प्राप्त कर सकते हैं ।

१. **हिन्दी के मर्मज्ञ करें रचनात्मक लेखन :** रचनात्मक लेखन के क्षेत्र में जानेवालों के पास दो विकल्प होते हैं । पहला है, स्वतंत्र लेखन (Free Lancing) और दूसरा फिल्म, टीवी, रेडियो आदि संस्थानों में काम करते हुए लेखन ।

२. **हिन्दी फिल्म का योगदान :** हिन्दी फिल्मों का भी हिन्दी भाषा को बढ़ावा देते हुए महत्वपूर्ण योगदान रहा है । १९४० से लेकर १९८० तक हिन्दी भाषा में बहुत अच्छी फिल्मों का निर्माण हुआ ।

३. **हिन्दी भाषा के जानकार बने अनुवादक, द्विभाषिया बनें:** अनुवाद का क्षेत्र बहुत बड़ा है। दुनिया भर में जैसे जैसे हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है, वैसे-वैसे अनुवादकों और द्विभाषिविदों की माँग बढ़ती जा रही है ।

४. **खेल जगत :** खेल जगत में भी हिन्दी सर चढ़कर बोल रही है । खेल हमारे राष्ट्रीय सम्मान की वस्तु है, जिसने आज अंतर्राष्ट्रीय रूप लेलिया है ।

५. **हिन्दी पढ़नेवाले बनाए पत्रकारिता में करियर :** हिन्दी का अध्ययन करनेवाले छात्रों के बीच पत्रकारिता रोजगार का एक आकर्षक विकल्प है, जहाँ मेहनती और प्रतिभावान युवाओं केलिए बहुत संभावनाएँ है ।

६. **भारत सरकार के भारतीय संस्कृति संबंध योजना :** पहले भारत सरकार की भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् विभिन्न देशों में तीन साल केलिए हिन्दी प्राध्यापक चुनकर भेजती थी, वह अब भी भेज रही है, पर अब अनेक देशों ने खुद भी नियुक्तियाँ करनी शुरुकर दी है ।

७. **हिन्दी के छात्र बनाए रेडियों जाँकी और समाचार के रूप में शानदार करियर :** रेडियो जाँकी ऐसा करियर है, जिसमें आपकी आवाज़ देश दुनिया में सुनी जाती है । इसी के मिलता-झुलता काम समाचार वाचक का भी है।

८. **हिन्दी में ग्लोबल संभावनाएँ :** ज्यों-ज्यों दुनिया ग्लोबल हो रही है, हिन्दी की मांँग बढ़ रही है । विश्व के अनेक देशों में हिन्दी का अध्ययन हो रहा है ।

९. **वैश्वीकरण के कारण विदेशों में भी हिन्दी के प्रति आकर्षण :** वैश्विकरण के कारण विदेशों में भी हिन्दी के प्रति आकर्षण बढ़ा है । अनेक देशों में हिन्दी अनुवादकों और दुभाषियों व शिक्षकों की माँग बढ़ी है ।

१०. **सूचना प्रौद्योगिकी :** इसके अंतर्गत मुख्य रूप से आकाशवाणी, दूरदर्शन, समाचार के साथ ई-मेल, इंटरनेट तथा वेबसाइट आदि का महत्वपूर्ण स्थान है ।

११. **हिन्दी के छात्र अध्ययन के क्षेत्र में पाएँ रोजगार के भरपूर अवसर :** हिन्दी का अध्ययन करनेवालों के बीच अध्यापन एक पारंपरिक करियर विकल्प के रूप में प्रसिद्ध है ।

१२. **हिन्दी भाषा के प्रमुख शिक्षण संस्थान :** हिन्दी भाषा तथा मीडिया, जर्नाज़्म आदि के प्रमुख शिक्षण संस्थानों का नाम दे रहे हैं । जहाँ से आप अपनी पसंद के क्षेत्र में अध्ययन करें ।

अंत में कह सकते हैं कि विश्वभर में हिन्दी भाषा के लगातार बढ़ते प्रयोग और प्रभाव ने हिन्दी में रोजगार की संभावनाओं के द्वारा खोल दिए हैं और यह भविष्य में और अधिक रोजगारपरक होगी, ऐसा निश्चित जान पड़ता है । आप अपनी रुचि, योग्यता और क्षमता के अनुसार अपना क्षेत्र चुनकर अपना भविष्य संवार सकते हैं । हिन्दी में रोजगार के अवसर भरपूर है । वर्तमान में बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर उत्पन्न करना ही भारत का चुनौतीपूर्ण लक्ष्य है । विवेकपूर्ण तरीके से बनाई गई नीतियाँ एवं उनका कुशल कार्यन्वय भारत को विकास के पथ पर अग्रसर कर सकता है एवं उसके नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार ला सकता है ।

संदर्भसूची :

१. हिन्दी भाषा के विकास में पत्र-पत्रिकाओं का योगदान ट्रप्रो.ऋषभदेव शर्मा

२. हिन्दी भाषा के विकास में पत्र्-पत्रिकाओं का योगदान ट्ट डा.गुर्रमकोंडा नीरजा

३. सेतु पत्रिका (प्रिट्सबर्ग अमेरिका से प्रकाशित द्वैभाषिक मासिक पत्रिका- ISSN-1475-1359 वंदना शर्मा

४. हिन्दी भाषा के संवर्धन में पत्र-पत्रिकओं का योगदान- राधा पब्लिकेशन, दिल्ली

५. स्वतंत्रता आंदोलन और हिन्दी पत्रकारिता : डा. अर्जुन तिवारी

६. हिन्दी पत्रकारिता का विकास ट्टश्याम कश्यप

७. वर्तमान परिदृश्य में इंटरनेट का प्रभाव और हिन्दी साहित्य-रचना संगम २०१८

८. वर्तमान में साहित्यकारों के समक्ष चुनौतियाँ- सुशील शर्मा

९. हिन्दी का अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य ट्ट प्रो. नरेश मिश्र

१०. हिन्दी साहित्य का इतिहास एवं वर्तमान स्थिति ट्ट लक्ष्मण राव

११. गवेषणा २०११ ट्ट हिन्दी भाषा : वर्तमान परिदृश्य ट्टसुनीता रानी घोष

१२. भारत दर्शन ट्ट वर्तमान परिदृश्य में हिन्दी (विविध) ट्टडा. सचिन कुमार